वृंदा-विष्णु लांवा फेरे

वृंदा-विष्णु लांवा फेरे
धुन: रेश्मी सलवार ते कुर्ता जाली दा ।

बैठे दोनों सज-धज, नेड़े नेड़े ने।
होंण लगे वृंदा-विष्णु दे फेरे ने॥

इक सांवरा ते इक गोरी। बड़ी सुन्दर सोहनी जोडी॥
चर्चे इस जोड़ी दे चार चुफेरे ने - होंण लगे....

वृंदा वरमाला पाई। वृंदा वरयो हरिराई॥
बरसे रंग रस कलियां फुल बथेरे ने - होंण लगे.....

मंगल धुन वेदां गाई। हर वैदिक रीत निभाई॥
वर वधु ने लए वेदी दे फेरे ने - होंण लगे.....

होई शगणां नाल विदाई। डोली बैकुंठ विच आई॥
गीत "मधुप" दे गूंजे चार चुफेरे ने - होंण लगे..... ।

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33199/title/vrinda-vishanu-lavaan-fere

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |